भारतीय मनोविज्ञान का शिक्षा में योगदान

प्रा. चेतनभाई आर. पटेल
प्रा. अनिलाबेन एन. सोनी
अध्यापक,
श्री महावीर विधामंदिर ट्रस्ट बी.एड्. कोलेज, पांडेसरा

विश्व की समस्त संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है, भारतीय संस्कृति की प्रसंशा करते हुए शिक्षाकार ने कहा हे,

धन्यो ही भारतो देशः धन्या भारत संस्कृति |
भारतीय जनाः धन्याः धन्यास्माकं परंपरा | (निर्गम सागर पञ्चांग पृ-|||)

भारतीय संस्कृति अपनी विशेषताओं के कारण विश्व में अत्यंत सम्मानित स्थान रखती है | आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, सर्वांगीणता, अविच्छिन्नता, त्याग, तपनीयता एवं विश्वशांति की भावना आदि कुछ सनातन बातें हैं जिनके आधार पर भारतीय संस्कृति सर्वप्रथम एवं सार्वभौम संस्कृति कही जाती है |

आज जबकि पाश्चात्य भौतिकवाद की आक्रामक चकाचौंध ने पुनः भारतीय संस्कृति को चुनौती दी है, आशा करनी चाहिए की वर्तमान संघर्ष से इसका स्वरूप और भी निखर कर निकलेगा |

देशकाल और ज़माने के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन आता रहा है | हर काल में शिक्षा में नये आयाम संमिलित होते रहे है | समय की मांग के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन करना ही पड़ेगा | शिक्षा में परिवर्तन तभी आयेगा जब सामाजिक परिवर्तन शक्य होगा | इसलिए शिक्षण सामाजिक परिवर्तन का प्रेरक रहा है | पहले के समय की शिक्षा गुणविकास, शिष्ट, संस्कार, शरीर-मनकी तंदुरस्ती इत्यादि को केन्द्र में रखकर दी जाती थी | शिक्षा के विषय में याज्ञवल्कय मुनिने कहा है, - मानव को चारित्र्यवान और विश्व उपयोगी बनाये वाही शिक्षा है | एरिस्टोटल ने कहा है,- तंदुरस्त शरीर में तंदुरस्त मन का निर्माण करना शिक्षा |

शिक्षा की आज की संकल्पना 'सर्वांगी विकास, जन्मगत शक्तिओं का प्रगटीकरण, संपूर्ण व्यक्तिमता की अभिव्यक्ति, रोटी कैसे मिलेगी और भोजन मीठा बनाना' ये हुई शिक्षा की आज और कल | भारतीय शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षा पद्धति का आधार भारतीय शिक्षा को ही बनना पड़ेगा | भारतीय शिक्षा दर्शन एवं भारतीय मनोविज्ञान पर आधारित शिक्षण पद्धति भारत की राष्ट्रीय शिक्षण पद्धति होगी | अतः भारतीय विद्वानों एवं मनोवैज्ञानिकों को इस तथ्य का स्वीकार कर, प्रयास करना होगा | भारतीय मनोविज्ञान अपने में पूर्ण है हमें भारत की उन मनोवैज्ञानिक पद्धतियों की खोज करनी होगी, जो मनुष्य की उन नैशार्गिक शक्तिओं एवं उपकरणों को सजीव बना देती है जिनके द्वारा वह ज्ञान को

आत्मसात् करता है | भारत के आदर्शों और उन पद्धतियों को अधिक प्रभावशाली और आधुनिकतम् संगठन के रूप में जीवित करना होगा, जिनके आधार पर विकसित शिक्षा ही भारतीय शिक्षा होगी | इस तरह से हमें भारतीय शिक्षा को मनोविज्ञान के आवश्यक तत्वों से जोड़ना पड़ेगा |

१. आध्यात्मिकता

भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य की मूल प्रकृति आध्यात्मिकता है | मनुष्य अपनी इस आध्यात्मिक प्रकृति की और सचेत नहीं रहता | श्री अरविंद के अनुसार,- मानव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमे एक ऐसी चेतना विधमान है जिससे वह अपने भौतिक, प्राणिक और मानसिक पहलुओं से ऊँचा है | यह कारण है जो की समस्त ज्ञान और आनंद का वाहक है | यही मनुष्य के भावी विकास का माध्यम है | मनुष्य की इस प्रकृति के कारण ही उसने कला, संस्कृति, सदाचार और धर्म के रूप में अपने अस्तित्व को अभिव्यक्त किया है आध्यात्मिक प्रकृति के कर्ण आसपास के वातावरण को बदल देता है और अपने अनुकूल बना लेता है | आधुनिक शिक्षा में मानव की इस आध्यात्मिक प्रकृति के कारण अपने आसपास के वातावरण को बदल देता है और अपने अनुकूल बनालेता है |

आधुनिक शिक्षा में मानव की इस आध्यात्मिक प्रकृति की उपेक्षा की जा रही है | इस लिए वह विकास और उच्च स्तरीय आयामों में प्रवेश नहीं कर पा रहा है | अतः भारतीय मनोविज्ञान के इस तत्व को शिक्षा का आधार बनाया जाये तो मनुष्य पूर्ण विकास प्राप्त कर सकता है |

२. एकाग्रता

मन की एकाग्रता ही संपूर्ण शिक्षा का सार है | ज्ञान प्राप्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है और वह है एकाग्रता | एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होगी, ज्ञान की प्राप्ति भी उतनी ही अधिक होगी | प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने चितवृति निरोध को शिक्षा का लक्ष्य माना है | राजयोग में धारण, ध्यान और समाधि एकाग्रता के ही क्रमिक स्तर है | समाधि पूर्ण एकाग्रता की स्थिति है, जहाँ ज्ञान स्वरूप आत्मा का दर्शन होकर विषय का यथार्थ ज्ञान होता है |

एकाग्रता की स्थिति ध्यानयोग के अभ्यास से प्राप्त होती है | योग आधारित शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है | ज्ञानार्जन के लिए निम्नतम श्रेणी के मनुष्य से लेकर उच्चतम वैज्ञानिक तक को इसी मार्ग का चयन करना पड़ता है | एकाग्रता के कारण ही समस्त ब्रह्माण्ड के रहस्य खुलते है |

३. शुसुप्त ज्ञान(अन्तर्निहित शक्तियाँ)

शिक्षा का उद्देश्य अन्तर्निहित शक्तियों का जागरण है | भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार आत्मा ज्ञान का प्रकाश है, मनुष्य को आत्मा के अनावरण से ही ज्ञान का प्रगटीकरण होता है | श्री अरविंद के अनुसार मस्तिष्क को ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता जो की जीव के आत्मा में शुसुप्त ज्ञान के रूप में पहले से ही गुप्त न हो | अतः समस्त ज्ञान चाहे वह भौतिक हो अथवा आध्यात्मिक मनुष्य के आत्मा में है | जैसे जैसे मनुष्य सीखते जाता है, वैसे इसके ज्ञान की वृद्धि होती रहती है | सच्ची शिक्षा उस समय आरंभ होती है जब मनुष्य बाहरी सहारों को छोड़कर अनंतता से जुड़ता है | शिक्षा

का ल्खस्य नये सिरे से कुछ निर्माण करना नहीं है, उसे तो मनुष्य में पहले से ही शुसुप्त शक्तियों का अनावरण और विकास करना है |

४. ब्रह्मचर्य

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के मूल में सबसे महत्वपूर्ण था ब्रह्मचर्य | भारतीय शिक्षा का मूल आधार ब्रह्मचर्य का पालन है, जो की हर शिक्षार्थी के लिए आवश्यक है | भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुसार तो विधाध्ययन कार्य ही ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता था |

स्वामी विवेकानंदजी ने भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक बताया है | पूर्ण ब्रह्मचर्य से प्रबल बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न होती है | ज्ञान बौद्धिक प्रक्रिया है | राग, द्वैष, काम, क्रोध, अहंकार आदि मन के विकारों से बुद्धि आच्छादित हो जाती है | अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है | मन को इन विकारों से बचाना अत्यंत आवश्यक है | अध्यात्म के माध्यम से उत्तम शिक्षा एवं श्रेष्ठ प्रतिभा का विकास सम्भव है | शिक्षा, विधा, साहित्य, कला, आदि क्षेत्रो में महान पुरुषों ने जो कुछ सफलता प्राप्त की है, उनको सफलता इसी साधन के कारण मिली है | ब्रह्मतेज से ओत-प्रोत भारत की युवाशक्ति जब जाग्रत होगी, तभी तेजस्वी भारत का निर्माण होगा जो विश्व का आध्यात्मिक दिशा निदर्शन करने में समर्थ होगा |

५. योग

वैदिक ऋषियों ने ब्रह्मविधा के साथ ही योग विधा का आविष्कार किया | भारतीय साधनाके प्रत्येक क्षेत्र में योग सर्वोच्च स्थान है |

योग शब्द संस्कृत के युज् धातु से बना है, जिसका अर्थ युक्त करना, एक्य और मिलना | मानव शारीर, मान एवं आत्मा का एक संगठित रूप है | महर्षि पतंजलि ने इस दर्शन के सिद्धांतो को योग सूत्रों में संकलित किया है | पातंजल योग सूत्र भारतीय मनोविज्ञान का आधारभूत एवं प्रमाणभूत शास्त्र है | ध्यानी पुरुष मान के संयम के द्वारा उसका साक्षात्कार कर सकता है | पतंजलि ने मनको वश में करने के साधन बताएँ है और उसे अष्टांग योग कहा है | अष्टांग योग के आठ अंग है, योग, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि | इनके पालन के बिना समाज की व्यवस्था सही तरीके से चल ही नहीं सकती |

योग विज्ञान प्राचीन शिक्षा पद्धति का अभिन्न अंग था | वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस अमूल्य विज्ञान का उपयोग करना आवश्यक है | योग विज्ञान को शिक्षा का आधार बनाना परमावश्यक है, भौतिक शरीर में अपर शक्तियाँ विधमान है | यह शक्ति शुसुप्त पड़ी है | मनुष्य मस्तिष्क का केवल दशवाँ भाग ही उपयोग में आता है, शेष भाग शुसुप्त ही है | योग के अभ्यास द्वारा ही उसे जाग्रत किया जा सकता है | योगाभ्यास द्वारा मानसिक शक्तियों का विकास होता है | योग से व्यक्ति के सात्विक आचार विचार बनते है | शिक्षाशास्त्र में सनातन विधा का अध्ययन करें एवं योग को शिक्षा पद्धति में संकलित करें | मनुष्य को ज्ञान बहार से प्राप्त नहीं होता, आत्मा के अनावरण से ही ज्ञान का प्रगटीकरणहोता है | ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र मार्ग एकाग्रता है | चित्त की एकाग्रता ही शिक्षा का

सार है | चित्त ही शिक्षा का माध्यम है | भारतीय चिंतन में चितवृति निरोध को ही शिक्षा का लक्ष्य माना है | चित्त की वृतियों का निरोध ही योग है | योग साधना शिक्षा की प्रणाली है | योग आधारित शिक्षा ही वास्तव में शिक्षा है |

६. ॐ

ॐ नाद ब्रह्म भी कहा जाता है | ॐ शब्द अ, उ, म् से बना है ॐ की ध्वनि का नाड़ी केन्द्रों पर एवं प्राण की तरंगो पर चमत्कारिक प्रभाव होता है | मन पूर्णत: शान्त एवं एकाग्र हो जाता है और चेतना की शक्ति जाग्रत होती है एवं मस्तिष्क की शक्तियाँ बढती है | ॐ के जाप से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है | विधालयों में ॐ की ध्वनि को दैनिक प्रार्थना का अंग बनाना एवं शिक्षण कार्य ॐ की ध्वनि से प्रारंभ करना चाहिए | इससे मस्तिष्क शांत एवं एकाग्र होता है, जो ज्ञानार्जन हेतु आवश्यक है |

७. संस्कार

शिक्षा स्वयं प्रक्रिया है | भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार संस्कार शिक्षा का मूल आधार है | संस्कारो के आधार पर ही शिक्षा के द्वारा बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, एवं, आध्यात्मिक विकास होता है | ज्ञान के उपार्जन और बुद्धि के विकास में ही नहीं, बालकों के नैतिक चरित्र एवं सांस्कृतिक व्यक्तित्व के निर्माण में भी संस्कारो का बहुत महत्व है |

आधुनिक शिक्षा प्रणली में संस्कार की घोर उपेक्षा की जा रही है | समाज में यह संस्कार, परंपरा भी अब कमजोर हो रही है | नई पीढ़ी मन से कमजोर और हिन् बनती जा रही है \ समाज और विधालयों में नैतिक और सांस्कृतिक संस्कारों का वैभव बढ़ने पर ही स्वतंत्र भारत एक गौरवशाली बन सकता है | शिक्षा के माध्यम से ही वह अपनी राष्ट्रीय संस्कृति को ग्रहण कर सकता है | शिक्षा के द्वारा उसका शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है | शिक्षा के माध्यम से मनुष्य का चरित्र निर्माण संभव है | उसका समाजीकरण भी शिक्षा के माध्यम से ही शक्य बनता है| शिक्षा के माध्यम से हरेक पीढ़ी के साथ समाज की प्राचीन निधि का संरक्षण, संवर्धन एवं हस्तान्तरण होता रहता है | भारतीय संस्कृति में शिक्षा को पवित्रतम प्रक्रिया माना गया है | भारतीय चिंतन में अज्ञान को अहंकार एवं ज्ञान को प्रकाश माना गया है | शिक्षा एक प्रकाश है | अंधकार को हटाना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है | हर राष्ट्र का अपना जीवनदर्शन होता है और जीवनदर्शन पर आधारित अपना शिक्षादर्शन होता है | शिक्षा दर्शन के द्वारा शिक्षा की दिशा निर्धारित होती है | आंतर राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में कहा गया है की प्रत्येक देश में शिक्षा व्यवस्था वहाँ की राष्ट्रीय चेतना, संस्कृति एवं परंपराओं की सर्वोच्च अभिव्यक्ति होती है | शिक्षा का लक्ष्य एवं स्वरूप कैसा होना चाहिए, यह शिक्षा दर्शन निश्चित करता है | किन्तु शिक्षा के निर्धारित लक्ष्य कैसे प्राप्त किए जा सकते है? शिक्षा की पद्धतियाँ कैसी होनी चाहिए ? इत्यादि मनोविज्ञान के द्वारा निर्धारित होता है | शिक्षा और मनोविज्ञान का घनिष्ट संबंध है | शिक्षा मानव विकास की प्रक्रिया है | मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन करता है और शिक्षा की प्रक्रिया में सहायक होता है |

उपर्युक्त विवेचन का सारांश यह है कि मनोविज्ञान मानव के विकास की प्रक्रिया के लिए अत्यन्त आवश्यक है | आज भारतीय मनोविज्ञान के अध्ययन एवं विकास की अत्यन्त आवश्यकता है | मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय जीवन के निर्मित सभी प्रकार के चेतन-अचेतन व्यवहार एवं चेष्टाएँ है | भारतीय मनोविज्ञान अपने में पूर्ण है |

८. भारतीय शिक्षा के सुचितार्थ

- बालक के शरीर, मन और आत्मा के विकास को महत्व देकर बालक के व्यक्तित्व के पूर्ण को महत्वपूर्ण बनता है |
- यह शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया को पूर्ण बनती है |
- जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त करने की ओर दिशा दर्शन देती है |
- 'सा विधा या विमुक्तये' सूत्र पर ध्यान केन्द्रित करती है |
- स्वार्थ वृति का त्याग कर परमार्थ वृति का उदय करती है |
- व्यक्ति के द्रष्टि क्षेत्र को निरंतर व्यापक बनाने की प्रक्रिया सफल बनती है |
- व्यक्ति निर्माण द्वारा राष्ट्र निर्माण का ध्येय सिद्ध हो सकता है |
- ज़ीव, जगत और जगदीश का ज्ञान प्राप्त होता है |
- जीवन मूल्यों के निरंतर विकास की शक्यता बनाए रखती है |
- प्राचीन ज्ञान विज्ञान की जानकारी विधार्थियो को प्राप्त होती है |
- सभी धर्मो का ज्ञान प्राप्त होगा |
- छात्रों का ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक विकास होगा |
- छात्र संस्कृत भाषा के महत्व से ज्ञात होगा |
- शिक्षा में योग को स्थान मिलेगा जिससे एकाग्रता और समद्रष्टि का विकास होता है |
- मन की शक्तियों के विकास के कारण सर्जनशक्ति का विकास होगा |
- मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति गौरव एवं प्रेम बढेगा |
- छात्रो के व्यक्तिगत विकास को ध्यान में रखा जायेगा |
- शिक्षा के नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को स्वीकारते हुए छात्रों में नैतिक एवं चारित्रिक गुणों के विकास को महत्व प्राप्त होगा | शिक्षा सदैव उपयोगी सिद्ध होगी |

संदर्भसूचि

1. कुमार, शशिप्रभा (२००५). भारतीय संस्कृति विविध आयाम. दिल्ली :विधा भारती प्रकाशन.
2. तोमर, लज्जाराम (१९९९). भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान के आधार. हरियाणा :विधा भारती प्रकाशन.
3. देसाई, किशोरसिंह (२००९). अध्येता का विकास और अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया. अहमदाबाद : वारिषेण प्रकाशन-अमोल प्रकाशन.
4. नटू ओर अन्य (२००५). शैक्षणिक मनोविज्ञान. अहमदाबाद :नीरव प्रकाशन.
5. भिड़े, निवेदीता (२०१२).स्वामी विवेकानंद का जीवन और संदेश. अहमदाबाद :विवेकानंद केन्द्र.
6. योग :चित्वृति : निरोध :योगसूत्र.
7. योगसूत्र : महर्षि पतंजलि.